भजन

तर्ज–साजन मेरा उस पार है

अपना धनी श्यामा श्याम है
चरणो में उनके आराम है

1–कर सिंगार श्यामा जी आये है
अर्श मिलावा संग लाये है
आगा लिया मेहरबान है
श्यामा जी को दिया मान है

2–बायें अंग श्यामा जी विराजे है
शोभा अनुपम साजे है
रूहों को मिलता यहां ताम है
चरणों में उनके आराम है

3–चरण पिया के सुखदाई है
चरणो में रूह अब आयी है
तितहीं भई कुर्बान है
चरण रूहों के प्राण है

4–सब अंग से नूर झलकता है
इश्क का सागर उमड़ता है
रुहों ने पिया इश्के जाम है
चरणों में रूह का आराम है